बोतल तथा डब्बाबन्द दूध में स्तनपान का महत्व कम होता जा रहा है।

''शिशु को स्तनपान कराना मातृत्त्व का है पहला सूचक''

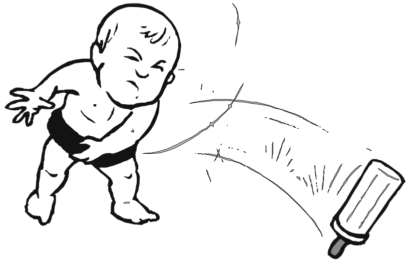

भारत एक ऐसा देश है जहां माता के दूध का अनगिनत महत्व है। इसे अखंड और सर्वोत्तम माना गया है। छत्रपति शिवाजी की जीवनशैली आधारित शौर्य गाथाओं में देखने को मिलता है। इसी भारत भूमि पर बदलते समय के साथ लोग स्तनपान का महत्व भूलते जा रहे हैं। बोतल में डालकर पाउडर दूध पिलाना एक फैशन सा बन गया है। कहीं-कहीं इसे स्टेटस सिम्बॉल माना जा रहा है। इसके विपरीत विदेशों (जहां से पाउडर दूध का कल्चर हमारे देश में आया है) में स्तनपान पर जन जागृति अभियान चलाया जा रहा है। माता का दूध सभी शिशुओं को मिले इसके लिए 'मिल्क बैंक' चलाए जा रहे है तथा लोगों को इसका महत्व समझाया जा रहा है।

हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे को सर्वोत्तम आहार मिले। डब्बाबन्द पाउडर का दूध बनानेवाली कंपनियों के लुभावने विज्ञापन देखकर लोग भ्रमित हो रहे हैं। ऐसी धारणा बन गई है कि पाउडर के दूध के बिना उनके शिशु का खुराक अधूरा है। विज्ञापनों में पाउडर दूध पीनेवाले बच्चे को तंदरुस्त तथा ऐसी माता को समझदार बताया जाता है। इन विज्ञापनों में प्रोटीन, विटामिन्स, मिनरल्स, वसा जैसे तत्वों का महत्व बताया जाता है तथा उस डब्बे में इन तत्वों की मौजदगी बताई जाती है। जानकारी के अभाव में शिक्षित वर्ग भी भ्रमित हो जाते हैं तथा माता के दूध पर संदेह करने लगते हैं। इसके बाद माता का दूध पीनेवाले शिशु में थोड़ी भी तकलीफ दिखती है तो डब्बाबन्द पाउडर का दूध शिशु को पिलाना शुरु कर देते हैं !!

सच्चाई तो यही है कि माता के दूध की तुलना में अब तक कोई पाउडर दूध नहीं बना है और ना ही भविष्य में बन पाएगा।

नौकरी करने वाली माता अपने शिशु को बोतल का दूध पिलाना अपनी मजबूरी मानती है। यह उनकी मानसिक मजबूरी है जो स्तनपान कराने में अवरोधक बनता है। लोगों में यह गलत धारणा बैठ गई है कि स्तनपान कराने से स्तन ढीले हो जाते है। यह मान्यता गलत है। इस भ्रम के चलते कुछ महिलाओं के पति भी शिशु को बोतल से दूध पिलाने की सलाह देते हैं। स्तनपान से स्तन का आकार संतुलित रहता है।

कभी-कभी अस्पतालों में तथा चिकित्सकों के केबीन में पाउडर दूध बनानेवाली कम्पनियों द्वारा मुफ्त में दूध वितरण का विज्ञापन देखने को मिलता है। इससे लोगों में भ्रम पैदा होता है। अस्पतालों में ऐसे पोस्टर देखकर डब्बाबन्द दूध को ही लोग बेहतर मान लेते हैं।

स्त्री-रोग तथा बाल-रोग विशेषज्ञों को चाहिए कि स्वयं स्तनपान के बारे में प्रसूता तथा परिजनों को इसकी जानकारी दें जबकि इसमें बेकार का समय गंवाना सोचकर नर्सों पर यह भार सौंप दिया जाता है। तारण में ऐसा देखने को मिला है कि अस्पताल में जन्म लेने वाले अधिकतर बोतल से दूध पीते हैं।

छह महीने तक शिशु को माता के दूध में पर्याप्त मात्रा में पोषण मिलता है। माता के दूध में अन्य कई फायदे हैं जो पाउडर के दूध में नहीं है।

५० प्रतिशत शिशु को सिर्फ माता का दूध नहीं दिया जाता है। ११ प्रतिशत को पहले महीने तक तथा ५५ प्रतिशत को पहले के चार महीने से अधिक दूध या खुराक दिया जाता है।

२० से ३० प्रतिशत शिशुओं को स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा चिकित्सकों की अज्ञानता के कारण माता के दूध के अतिरिक्त अन्य आहार दिया जाता है !!